स्नातक कार्यक्रम

बी.ए. संस्कृत (सामान्य) कार्यक्रम

BAFSK/BAM

पाठ्यक्रम -**BSKC** -132 **संस्कृत गद्य साहित्य**

सत्रीय कार्य

(जनवरी, **2025** एवं जुलाई, **2025** सत्रों के लिए)

BSKC -132 **संस्कृत गद्य साहित्य**

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- **110068**

स्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य (2025-25)

पाठ्यक्रम शीर्षक- संस्कृत गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम कोड : BSKC -132/2025-26

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है । सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं । सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे ।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं । यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें ।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए ।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ....
नाम : ....
पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

दिनाँक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए । फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए । अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए ।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए । अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए । निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए । उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए । मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें । उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए ।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें ।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए ।

शुभकामनाओं के साथ ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

--

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:

जनवरी, 2025 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2025

जुलाई, 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2026

सत्रीय कार्य
BSKC -132
संस्कृत गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC** -132
पाठ्यक्रम शीर्षक : संस्कृत गद्य साहित्य
सत्रीय कार्य : **BSKC** -132/**TMA/2025-26**

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : -

खण्ड-क

(व्याख्यात्मक प्रश्न)

1. अधोलिखित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 20×2=40

(क) एवं विधयापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीताः विक्लवा भवन्ति राजानः, सर्वाविनयाधिष्ठानतां च गच्छन्ति। तथाहि अभिषेकसमय एव चैतेषां मङ्गलकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्। अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम्, पुरोहितकुशाग्र सम्मार्जनीभिरिव अपह्रियते क्षान्तिः, उष्णीषपट्टबन्धेनेव आच्छाद्यते जरागमनस्मरणम्, आतपत्रमण्डलेनेव अपसार्यते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिव अपह्रियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिव उत्सार्यन्ते गुणाः, जयशब्दकलकलैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, ध्वजपट पल्लवैरिव परामृश्यते यशः ।

अथवा

जातुषाभरणानीव सोष्माणं न सहन्ते, दुष्टवारणा इव महामानस्तम्भनिश्चलीकृताः न गृह्णन्ति उपदेशम्, तृष्णाविषमूर्च्छिताः कनकमयमिव सर्व पश्यन्ति, इषव इव पानवर्धिततैक्ष्ण्याः परप्रेरिताः विनाशयन्ति, दूरस्थितान्यपि फलानीव दण्डनिक्षेपैः महाकुलानि शातयन्ति । अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोकविनाशहेतवः, श्मशानाग्नय इव अतिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इव अदूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति, चिन्त्यमाना अपि महापातकाध्यवसाया इव उपद्रवमुपजनयन्ति, अनुदिवससमापूर्यमाणा पापेनेव आध्मातमूर्तयो भवन्ति, तदवस्थाश्च व्यसनशतशरव्यतामुपगताः वल्मीकतृणाग्रावस्थिताः जलबिन्दव इव पतितमप्यात्मानं नावगच्छन्ति ।

(ख) भगवन्! श्रूयतां यदि कुतूहलम् । ह्यः सम्पादित-सायन्तन-कृत्ये, अत्रैव कुशाऽऽस्तरण मधिष्ठिते मयि, परितः समासीनेषु छात्रवर्गेषु, धीर-समीर-स्पर्शन मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रततिषु, समुदिते यामिनी-कामिनी-चन्दनबिन्दौ इव इन्दौ, कौमुदी-कपटेन सुधाधारामिव वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्ता शुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु-पतंग-कुलेषु कैरव-विकाश-हर्ष-प्रकाश-मुखरेषु च"चरीकेषु, अस्पष्टाक्षरम्, कम्पमान-निःश्वासम्. क्ष्वथत्कण्ठम्, घर्घरितस्वनम्, चीत्कारमात्रम्, दीनतामयम्, अत्यवधान-श्रव्यत्वादनुमितदविष्ठतं क्रन्दनमश्रौषम् ।

अथवा

अथ स मुनिः "भगवन् ! धैर्येण, प्रसादेन, प्रतापेन, तेजसा, वीर्येण, विक्रमेण, शान्त्या, श्रिया, सौख्येन, धर्मेण विद्यया च सममेव परलोकं सनाथितवति तत्रभवति वीरविक्रमादित्ये, शनैः शनैः पारस्परिकविरोध-विशिथिली-कृतस्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी-भ्रूभङ्ग-भूरिभाव-प्रभाव-पराभूत-वैभवेषु भटेषु, स्वार्थ-चिन्ता-सन्तान-वितानैकतानेष्वमात्यवर्गेषु, प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु, "इन्द्रस्त्वं वरुणस्त्वं कुबेरस्त्वम्" इति वर्णनामात्रसक्तेषु बुधजनेषु कश्चन गजिनी-स्थाननिवासी महामदो यवनः ससेनः प्राविशद् भारते वर्षे। स च प्रजा विलुण्ठ्य, मन्दिराणि निपात्य, प्रतिमा विभिद्य, परश्शतान् जनांश्च दासीकृत्य, शतश उष्ट्रेषु रत्नान्यारोप्य स्वदेशमनैषीत्।

खण्ड-ख

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 700 शब्दों (प्रत्येक) में लिखिए। 15×2 = 30

2. पंडिता क्षमाराव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

गद्यकाव्य की विकास यात्रा का वर्णन कीजिए ।

3 . 'शुकनासोपदेश' के आधार पर 'लक्ष्मी के स्वाभाव का वर्णन कीजिए।

अथवा.

'शिवराजविजय के आधार पर कन्या का वर्णन कीजिए।

खण्ड-ग

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोटः निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक) लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

6×-5 =30

4. वैदिक एवं लौकिक गद्य को स्पष्ट कीजिए ।

5. अम्बिकादत्त व्यास का जीवन परिचय लिखिए

6. 'शुकनासोपदेश' के अनुसार चन्द्रपीड का वर्णन कीजिए।

7. 'शिवराजविजय' में वर्णित योगिराज का वर्णन कीजिए |

8. महाकवि भारवि की भाषाशैली की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

9. नीति अथवा लोककथा से सम्बंधित किसी एक ग्रन्थ का परिचय लिखिए ।

10. 'धनपाल के कृतित्व और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।